

### विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बढकारियाँ ही हमारी उचीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

# रामचरितमानस की समकालीन व्याख्या के दार्शनिक सूत्र

रामचरितमानस पर विगत शताब्दियों में असंख्य टीकाएँ, भाष्य और प्रवचन हुए हैं—किंतु उनमें अधिकांश या तो कथा-प्रवाह के रूप में सीमित रहे हैं, या केवल धार्मिक और भावनात्मक पक्ष को ही प्रतिध्वनित करते रहे हैं। समकालीन वैश्विक विमर्शों—जैसे मानव उत्कर्ष, आत्मबोध, नैतिक नेतृत्व, संज्ञानात्मक विज्ञान, प्रसन्नता का विज्ञान, प्रज्ञा का विज्ञान, जीवन में अर्थ की अनुभूति, और नैतिक निर्णय का मनोविज्ञान आदि—के आलोक में मानस के सैद्धांतिक पक्षों की गूढ़ व्याख्या को जो आवश्यकता थी,वह अब तक उपेक्षित रही है। यह प्रस्तुति इस रिवित की पूर्ति का एक निष्ठावान प्रयास है—जिसमें तुलसीकृत पदों को आधुनिक मानव के बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक जीवन से इस प्रकार जोड़ा गया है कि वे पूज्य रहकर भी प्रयोज्य बनें; केवल कथ्य न रहकर पथ्य बनें। ऐसी समन्वित, संवादधर्मी और तात्त्विक व्याख्या पूर्ववर्ती परंपरा में दुर्लभ है—और संभवतः पहली बार इस प्रकार के विमर्श में मानस को वैश्विक और समसामयिक अर्थ-स्तरों पर प्रतिष्ठित किया गया है।

नवोन्मेषी,तात्त्विक और समसामयिक दृष्टिकोण से की गईरामचरितमानसकी यह व्याख्या आज के वैश्विक परिदृश्य में केवल आध्यात्मिक नहीं,बल्कि सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक, पर्यावरणीय और वैश्विक शांति के स्तर पर भी एक गहन मार्गदर्शक बनकर उभरती है। आज जब विश्व समाज मानसिक स्वास्थ्य संकट, सामाजिक विषमता, आर्थिक असंतुलन,नैतिक भ्रम,पारिवारिक विघटन, पर्यावरणीय पतन और अंतरराष्ट्रीय तनावों के दौर से गुजर रहा है—तब मानस का यह पुनपठ आत्मबोध, करुणा, अर्थपूर्ण जीवन, और विवेकपूर्ण निर्णय की ओर एक ठोस सांस्कृतिक-सांवेधानिक सेतु प्रस्तुत करता है, जो मानव उत्कर्ष के समकालीन वैज्ञानिक प्रतिमानों से गहराई से मेल खाता है।

सामाजिक स्तर पर यह व्याख्या सम्मान, संवाद और समावेशिता के माध्यम से सामाजिक बंधुत्व और न्याय आधारित सह-अस्तित्व को पोषित करती है। आर्थिक क्षेत्र में यह सीमित उपभोग, नैतिक उत्पादन, और सहकारी विकास की प्रेरणा देती है। पारिवारिक जीवन में यह स्नेह, श्रम और सम्मान के तंतु बुनती है, जो सामूहिक मानसिक स्वास्थ्य और आपसी विश्वास को आधारशिला बनाते हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से मानस की के माध्यम से पृथ्वी को धर्मस्वरूप मानने की चेतना को पुनर्स्थापित करती है—जो आधुनिक पारिस्थितिक नैतिकता और जलवायु न्याय से सीधे जुड़ती है। यह दृष्टिप्रकृति के साथ युद्ध नहीं, संवाद और संतुलन को प्राथमिकता देती है।

और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर—जहाँ युद्ध, उग्रवाद, और सभ्यताओं के संघर्ष की आशंकाएँ गहराती जा रही हैं—रामचरितमानस की यह मानवतावादी व्याख्या परिहृत सरिसधरमनहिँ पांडे जैसे मूल्यों को विश्व चेतना में स्थापित कर सकती है। यह शांति केवल युद्धिवराम नहीं, बल्किअंतः शांति, सांस्कृतिक सहिष्णुता, औरनैतिक कूटनीति के मार्ग से आती है। इस संदर्भ में मानस को यह प्रस्तुति वैश्विक शांति-निर्माण और संघर्ष-परिवर्तन के लिए एक नैतिक-दार्शनिक ढांचा प्रदान करती है।

इस प्रकार यह समन्वित व्याख्या रामचरितमानस को केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि 21वीं सदी की बहुआयामी वैश्विक चुनौतियों—मानवता, प्रकृति और विश्व व्यवस्था—के समाधान का एक जीवंत स्रोत बनाकर प्रस्तुत करती है। यह अतीत के शाश्वत सत्य को वर्तमान की भाषा में अनुवादित कर भविष्य की दिशा प्रस्तावित करती है—जहाँ आस्था और बौद्धिकता, परंपरा और नवोन्मेष, भारत और विश्व—एक ही संवाद में समाहित हो सकें।

रामचरितमानस केवल एक भक्तिग्रंथ नहीं, अपितु भारतीय चेतना की बहुलवर्णी धारा है, जिसमें शब्द केवल वर्ण नहीं, जीवित मूल्य बनकर प्रवाहित होते हैं। यह काव्य उस सांस्कृतिक आत्मा का साक्षात् रूप है, जो युगों—युगों से मानव को केवल ईश्वर की ओर नहीं, अपने भीतर की समष्टित्त दिव्यता की ओर ले जाती रही है। इसके पद्यरूप—दोहा, चौपाई, सोरठा और विविध छंद—जैसे विभिन्न स्तरों पर एक ही सत्य की बहुभाषिक अभिव्यक्ति हैं। उनमें कथा की सरलता, भावना की तीव्रता और सिद्धांत की गंभीरता का ऐसा त्रिवेणी—संगम है, जो मानस को केवल पाठ नहीं, प्रज्ञा, प्रेम और पुरुषार्थ का अद्वितीय प्रकाशपुंज बना देता है। इसीलिए, इस व्याख्या का ध्येय केवल व्याख्यान नहीं, आत्मसात् है—जिसमें हम मानस के सैद्धांतिक पद्यांशों को समकालीन दृष्टिकोण से देखने का साहस करें, और उन्हें जीवन में उतारने की दिशा प्रा्त करें।

रामचरितमानस की रचना केवल एक काव्य नहीं, अपितु एक समग्र जीवन-दर्शन है, जो भाषा, भक्ति और बुद्धि को समान रूप से आलोकित करता है। इसमें प्रयुक्त दोहे, चौपाइयाँ, सोरठे और छंद केवल भावनात्मक कविता नहीं हैं, वे अर्थ, भावना और दृष्टि के वाहक हैं। तुलसीदास

**रामचरितमानस की रचना केवल एक काव्य नहीं, अपितु एक समग्र जीवन-दर्शन है, जो भाषा, भक्ति और बुद्धि को समान रूप से आलोकित करता है। इसमें प्रयुक्त दोहे, चौपाइयाँ, सोरठे और छंद केवल भावनात्मक कविता नहीं हैं, वे अर्थ, भावना और दृष्टि के वाहक हैं। तुलसीदास ने इस ग्रंथ में ऐसी रचनात्मक संरचना की है जो कथा, भावना और सिद्धांत-तीनों को समान समर्पण से प्रस्तुत करती है।**
यदि हम इसकी पद्यविन्यास को अंतर्वस्तु के आधार पर देखें, तो मोटे रूप में तीन प्रकार के पद्य-कथानक, भावप्रधान और सैद्धांतिक-स्पष्ट होते हैं।

कथानक अंशों में रामकथा के विविध प्रसंग—जैसे श्रीराम का जन्म, वनगमन, युद्ध और राज्याभिषेक—का प्रवाह होता है। ये चौपाइयाँ कथा की गति को वहन करती हैं, पर वे केवल घटनाओं का विवरण नहीं, नैतिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती हैं। ये पद्य आज के समय में लोकहितकारी नेतृत्व जैसे विचारों को प्रत्यक्ष या प्रतीकात्मक रूप में प्रकट करते हैं।

भावप्रधान अंश मानस की आत्मा है। ये वे पद्य हैं जो श्रद्धा, प्रेम, करुणा, त्याग और भक्ति जैसे भावों को गहराई से स्पर्श करते हैं। ये केवल भक्तिपूर्ण अभिव्यक्तियाँ नहीं, बल्कि पूर्ण आत्मसमर्पण और आत्म-दया की उस परंपरा से जुड़ी हैं जो आज मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति के विमर्शों में अत्यंत प्रासंगिक मानी जाती है। परंतु सबसे महत्वपूर्ण और आज के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी, मानस के सैद्धांतिक पद्य हैं। यहाँ वह गूढ़ तत्व प्रकट होता है जो रामचरितमानस को एक सार्वकालिक जीवन-संहिता बना देता है। इन अंशों में तुलसीदास ने वैदिक ज्ञान, उपनिषदों की तत्त्वमीमांसा, भक्ति-सूत्रों की भावना और योगदर्शन की मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टियों को अत्यंत सरल अवधी भाषा में प्रस्तुत किया है। यह केवल आध्यात्मिक अनुभूति नहीं, बल्कि संज्ञानात्मक-भावनात्मक आरोपण का सूत्र है—जिससे यह समझा जा सकता है कि व्यक्ति जैसा सोचता है, वैसा ही अनुभव करता है। उसकी चेतना जिस प्रकार ढली होती है, उसी प्रकार उसका ईश्वर, संसार और स्वयं का बोध निर्मित होता है।

इन सैद्धांतिक अंशों को समकालीन संदर्भ में समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि आज मानवता केवल बाह्य संसाधनों से नहीं, आंतरिक क्षमताओं से भी संघर्ष कर रही है। आज का वैश्विक विमर्श मानव उत्कर्ष की ओर उन्मुख है, जिसमें केवल शारीरिक या आर्थिक सफलता नहीं, बल्कि भावनात्मक संतुलन, आत्मबोध, नैतिक स्पष्टता, संबंध बुद्धि और उद्देश्यपरक जीवन को मिलाकर समग्र जीवन की परिकल्पना की जाती है। रामचरितमानस के सैद्धांतिक पद्य इसी दिशा में शुभ और प्रासंगिक मार्गदर्शन देते हैं।

नीतिपरक कथनों में संबंधों की परीक्षा—क्षमता, गुणधर्म आधारित नैतिकता और संकट में धैर्य एवं दृढ़ता जैसे तत्त्व अंतर्निहित होते हैं—जो आज के नेतृत्व और मनोविज्ञान के केंद्र में हैं। ये केवल आदर्श स्थापित नहीं करते, बल्कि मूल्यधारित प्रतिक्रिया को संभव बनाते हैं।

इसी प्रकार समावेशी चेतना और गहन सहानुभूति जैसी अवधारणाएँ, जो आज के वैश्विक नैतिक विमर्श का आधार हैं, मानस के उन सूत्रों में सहजता से व्यक्त होती हैं जहाँ प्रत्येक प्राणी को राममु्य देखा जाता है। यह दृष्टि केवल धार्मिक सहिष्णुता नहीं सिखाती, बल्कि आंतरिक गरिमा और सार्वभौमिक सम्मान का अभ्यास कराती है।

समकालीन वैश्विक दर्शन में भी वही अंतर्दृष्टियाँ अब पुनः प्रा्गत हो रही हैं—जैसे अस्तित्ववादी मनोविज्ञान में अर्थ-रचना की भूमिका, सकारात्मक मनोविज्ञान में कृतज्ञता, करुणा और उद्देश्य, तंत्रिका-विज्ञान में ध्यानात्मक अवस्थाओं द्वारा मानसिक लचीलापन और सार्वजनिक नैतिकता में गरिमा-आधारित नेतृत्व आदि हैं। रामचरितमानस के सैद्धांतिक पद्य इन सभी से गहन संवाद करते हैं—उनसे टकराते नहीं, बल्कि उन्हें नवाचारी, कल्याणकारी और पूरक दृष्टि प्रदान करते हैं। इसलिए जब भी रामचरितमानस के सैद्धांतिक अंशों की समकालीन व्याख्या करता हूँ, तो मेरा उद्देश्य केवल परंपरा का अनुकरण करना नहीं, बल्कि संवादात्मक ज्ञान का अभ्यास करना है। यह प्रयास इस विश्वास से प्रेरित है कि मानस न तो केवल पूज्य ग्रंथ है, न केवल सांस्कृतिक स्मृति है। यह एक जीवंत जीवन-व्यवस्था है, जिसमें व्यक्ति की चेतना, उसका चरित्र और उसका समुदाय—तीनों के लिए गहरा मार्गदर्शन समाहित है। यदि हम इसे केवल पूज्यो, तो यह मूर्ति बनकर रहेगा। यदि इसे समझेंगे, तो यह दर्पण बनेगा। और यदि इसे जीएँगे, तो यह जीवन-पद्धति बन जाएगा—जिससे न केवल व्यक्ति, बल्कि समाज और संस्कृति-तीनों स्पष्टता, श्रद्धा और विवेक के साथ समृद्ध हो सकेंगे। यही मानस का समकालीन और वैश्विक सत्य है।

आज जब मानवता बाह्य साधनों की प्रचुरता और आंतरिक दिशाहीनता—दोनों के द्वंद में उलझी हुई है, तब रामचरितमानस के सैद्धांतिक अंश हमें स्थायित्व, विवेक और करुणा की पुनः स्थापना का आव्हान करते हैं। यह ग्रंथ हमें स्मरण कराता है कि अध्यात्म केवल सन्यास नहीं, अपितु संलग्नता में सार्थकता की खोज है; कि भक्ति केवल भावुकता नहीं, अपितु समर्पित विवेक का नाम है; और कि जीवन की प्रत्येक चुनौती—चाहे वह व्यक्तिगत हो या सामाजिक—उसकी गूंज मानस की किसी चौपाई में पूर्वाभासित है। जब हम इन गूढ़ पद्यों को समकालीन संदर्भ में समझते हैं, तो न केवल ग्रंथ जीवंत होता है, बल्कि हम स्वयं भी अधिक जागरूक, उत्तरदायी और करुणाशील मानव बनते हैं। यही रामचरितमानस की सार्वकालिक और सार्वभौमिक विजय है—कि वह समय के साथ, हर युग के साथ और अधिक प्रासंगिक हो उठता है।

व्याख्या जारी रहेगी!  
**—अतिथि सम्पादक,**  
**डॉ. दीप नारायण पाण्डेय**  
**( इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर )**  
**( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं। )**

# न्याय और पारदर्शिता की बजाय लैड रिकॉर्ड मॉडर्नाइज़ेशन योजना लापरवाही से अन्याय का औजार बन गई



सुचित्रा आर्य

26 अक्टूबर वह तिथि है, जो केवल एक व्यक्ति की पुण्यतिथि नहीं, बल्कि एक विचार, चेतना और युग की स्मृति है। यह वही दिन है जब किसानों के अधिकारों के अग्रदूत, न्याय और समता के प्रतीक चौधरी कुम्भाराम आर्य इस धरती से विदा हुए थे। वे उन विरले जननायकों में थे जिनके शब्द नीति बन गए और जिनकी दृष्टि ने किसानों को सामंती अंधकार से निकालकर अधिकारों के प्रकाश में ला खड़ा किया। सन् 1944 में बीकानेर रियासत के इतिहास ने नई करवट ली जब चौधरी साहब ने पहली बार भूमि रिकॉर्ड तैयार करने की मांग रखी। यह केवल प्रशासनिक सुधार नहीं था, बल्कि किसानों की गरिमा और आत्मसम्मान

का पोष था। वे जानते थे कि जब तक किसान कागज़ पर अदृश्य है, उसका अस्तित्व भी असुरक्षित है। उनका मानना था—अधिकार की नींव कागज़ में नहीं, सत्य में होती है; पर उस सत्य को प्रमाण कागज़ ही देता है।

उनके नेतृत्व में राजस्थान ने भूमि सुधारों की वह यात्रा शुरू की, जिसने किसान को खेत की मिट्टी से नहीं बल्कि उसके अधिकार से जोड़ा। काश्तकारी अधिनियम पारित हुआ, खातेदारी अधिकारों की स्थापना हुई और 1952 से 1966 तक चले भूमि सुधार कार्यक्रमों ने ग्रामीण समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। राजस्व नियमों के अनुसार हर बीस वर्ष में भूमि अभिलेखों का पुनः सर्वेक्षण होना चाहिए। 1972 में कांग्रेस सरकार के समय अंतिम बार पैमाइस और रिकॉर्ड दुरुस्ती हुई थी, पर उसके बाद दशकों तक प्रशासनिक सुस्ती छाई रही। सीमाएँ बदलीं, खेतों का आकार घटा-बढ़ा, मगर अभिलेख पुराने ही रहे। इस उपेक्षा ने भविष्य के विवादों की नींव बघ दी, जिसके दुष्परिणाम आज किसान भुगत रहे हैं।



प्रो. वीर बहादुर सिंह

स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात देश में सरकारी अफसरों और कर्मचारियों की बढ़ती लापरवाही और घूसखोरी से आम जनता के हेतु बनी सुविधाओं से नित घटित होती नई दुर्घटनाओं में सैकड़ों लोगों की बिना उनके किसी अपराध के जान चली जाती है। ऐसी दुर्घटनाएँ इस लोकतंत्र में एक आम बात है जो इस देश की जनता के लिए दुर्भाग्य के अतिरिक्त कुछ नहीं। लोगों को यह अहसास होना चाहिए कि पचहत्तर वर्ष में आदमी ही शरीर से जर्जर हो जाता है और कई उससे पहले ही अपनी स्वायत्तलोक की यात्रा पर निकल लेते हैं। फिर जर्जर हुआ लोकतंत्र कैसे संबल बना रह सकता है ?

इससे बढकर भी और दुर्भाग्य है कि संविधान जो बाबा साहब ने पचहत्तर

वर्ष पूर्व लिखा था उस काल की परिस्थितियों का आंकलन करते हुए, कैसे आज की स्थितियों में वह जनहित में बना रह सकता है? क्या उसमें वक्त के अनुसार बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं? कई दिमागी तौर पर सुखं नेता यह कहते नहीं अघाते कि यह किताब परमानेंट है, स्थिर है और अपरिवर्तनीय है। बाबा साहब यदि जीवित रहते तो वे लोक और उसके तंत्र की हालत देखकर अभी तक कितने अनर्गनित बदलाव कर देते और संभवतया पूरी किताब ही बदल डालते ?

अभिषात है देश की जनता वह न तो बाबा साहब को समझ पाई और न उनकी लिखी पुस्तक में निहित भावना को। मैं यह मानता हूँ कि बाबा साहबह के समय देश की जनता घोर अक्षमता से ग्रसित थी और बाद के सालों में शिक्षित तो बनी परन्तु मूढ़ होती चली गई। आज देश की स्थिति ऐसी हो चुकी है कि विदेशी कोई भी आक्रांता अपने हुनर और पटाओ तकनीकों से देश पर बिना खून खराबे के काबिज होकर शासन कर सकता है। आज जनता में कुम्बत बची ही नहीं और जो जीवंत है भी, उसे सत्तर सालों में पैदा हुए अहिरावण, हरने के लिए तैयार बड़े हैं।

एक अखबार में छपे अभी हाल का प्रकरण, राजस्थान के जैसलमेर जिले में एक एयर कंडीशन बस में आग लगने से सवारियों बाहर निकल ही नहीं सकीं, मसला पुनः 2021 का है जब केंद्र

बस के खिड़कियों के शीशे भी जाम थे, इमरजेंसी गेट भी बंद मिला वहां एक यात्री सीट लगाकर उस गेट के बीच खड़ा हो ही खत्म किया हुआ था। मीस यात्री तो जल के उसी में मर गए।केवल चार लोग किसी प्रकार कूद गए लेकिन सोलह यात्री बुरी तरह झुलस गए। यह दुर्घटना लापरवाही और समयावधि से उचित देखरेख के अभाव में घटी।

अखबार कहता है कि एसी गैस लीक होने और शार्ट सर्किट के कारण आग लगी। प्रश्न उठता है कि बस में आग बुझाने का यंत्र था अथवा नहीं? आग बुझाने का क्रियाशील यंत्र होने पर आग दिखते ही बुझाई जा सकती थी और एक बड़े हादसे को रोका जाना संभव था। सरकारी लापरवाही की हद तो तब हो गयी जब झुलसे हुए लोगों को प्राथमिक उपचार के लिए निकट कोई ट्रॉमा अस्पताल नहीं मिला। यह भी आजाद देश की आजादी का एक नमूना है या तोहफा।

अखबार की खबर के अनुसार हादसे से 280 किलोमीटर तक कोई मेडिकल सुविधा उपलब्ध नहीं थी। खबर कहती है कि 1०0 ट्रॉमा सेण्टर प्रदेश में बनने थे, उनके टेंडर भी हो चुके थे लेकिन वे सभी अकारण निरस्त कर दिए गए और बाद में पुनः टेंडर नहीं किये गये, क्यों? किस अफसर ने मना किया कि पुनः टेंडर नहीं करेंगे? यह मसला पुनः 2021 का है जब केंद्र

सरकार ने 85 करोड़ रुपये प्रति ट्रॉमा सेण्टर के हिसाब से राज्य को धन दिया था उस समय कहते है कि राजस्थान में कांग्रेस की गहलतोर सरकार थी। जो वर्ष 2०24 तक कार्यरत रही जब तक कि बीजेपी की सरकार नहीं बन गई।

यह हादसा अनेक प्रश्न छोड़ता है। केंद्र के धन उपलब्ध करने के पश्चात् भी राज्य ने ट्रॉमा सेण्टर क्यों नहीं बनाये? कौन मंत्री, कौन सचिव इस लैप्स के लिए दोषी हैं? तबके मुख्यमंत्री सहित, सम्बंधित मंत्री और सचिव को वर्तमान सरकार यथा शीघ्र सलाखों के अंदर डाले ताकि यह मिसाल बन सके आगे के लिए कि ऐसा जन विरोधी लैप्स कोई मंत्री या सचिव न कर सके। जब अनेक जिंदगीयां हादसे में स्वाहा हो जाती हैं तो उन्हें बचाने के लिए यदि सजा के बतौर दो-तीन सरकारी लोग कुबान किये जा सकें तब भी कुल मिलाकर सौदा सस्ता ही रहेगा।

जब तक प्रदेश की जनता अपने और अपनी के हित के लिए उद्देलित नहीं होगी सरकारी लापरवाहियां घटती रहेंगी। क्योंकि इस लोकतंत्र में प्रशासन अपने आप हकतीय नहीं होता जब तक कि कोई पुलिस रिपोर्ट अथवा जन आंदोलन सरकारी की खुमारी नहीं उडा दे लोग ऐसे ही बेमौत मरते रहेंगे और मंत्री, मुख्यमंत्री घड़ियाली आंखू बहा कर जनता के ही टैक्स से अर्जित धन में से ऐसी मौतों पर एक दो लाख रुपये



स्व. चौधरी कुम्भाराम आर्य

सत्यापन करते हुए ही रिकॉर्ड तैयार किए जाएँ। कृषि भूमि धाक, गोचर, औरण, जोहड़-पायतन तथा आबादी भूमि पर कौन, कहाँ और किस स्थिति में काबिज है—यह विवरण सटीक रूप से दर्ज किया जाए जो कंपनियाँ नियमों की अवहेलना कर रही है या बिना स्थलीय सत्यापन के रिपोर्ट दे रही हैं, उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई अनिवार्य की जाए। भूमि का आधुनिकीकरण केवल डेटा में नहीं, बल्कि किसान के विश्वास और अधिकार में प्रतिबिंबित होना चाहिए।

**—सुचित्रा आर्य,**  
**पूर्व विधायक एवं पूर्व**  
**उपाध्यक्ष, कृषि उद्योग विकास बोर्ड, राजस्थान**

# अफसरों की लापरवाही से हुए हादसों से मौतों पर सस्पेंशन काफ़ी नहीं, जेल हो और पेंशन बंद हो

मृतकों के परिजनों को सांत्वना स्वरूप मुआवजा देकर अपनी जिम्मेदारी की इति श्री कर लेगी और पर्रिजन धन प्राप्त कर मरने वाले को दुआएँ देते नहीं धकेंगे और सांत्वना देने वाली सरकार की जय बोलते रहेंगे।

किसी भी सामाजिक समूह में अथवा किसी भी व्यक्ति में यह साहस है कि वह पूछ सके कि अमुक कार्य में लापरवाही क्यों? काम पूरा करने में देरी क्यों? घटिया काम क्यों? ऐसे सवाल हर जागरूक नागरिक की जुबान पर होने चाहिए। जैसलमेर जिले की यह बस दुष्हातिका में उपजे अनेक सवालों से सम्बंधित सरकारी मंत्री और सचिव आदि से उनके उत्तर माँगना एक आवश्यक हो गया है, यथा शीघ्र नोटिस देकर सबसे पहले जिम्मेदारों —आरटीओ, बस पंजीयक, वित्त सचिव, यातायात सचिव और तत्कालीन मुख्य मंत्री को समेटते हुए वर्तमान सरकार अपनी सामर्थ से उदाहरणीय सजा दे ऐसी अपेक्षा की जाती है जिससे लापरवाही के कारण मौत के मुंह में जाने से लोग बच सकें। वर्तमान भारतीय जनता पार्टी की सरकार में क्या इतना साहस है कि वह यह सब कर सके ?

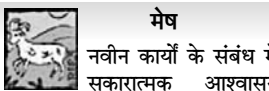
**—प्रो. वीर बहादुर सिंह,**  
**सेवा निवृत्त पूर्व कुलपति,**  
**स्वतंत्र विचारक और लेखक,**  
**उदयपुर।**

# चिकित्सीय लापरवाही के मामले में उपभोक्ता आयोग ने मरीज के पक्ष में फैसला सुनाया

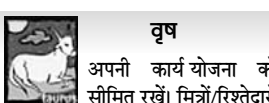
- आपरेशन में लापरवाही बरतने पर मरीज की एक आंख की रोशनी चली गई थी**
- साढ़े छह लाख रूपए की मुआवजा राशि 10 साल के ब्याज के साथ देनी होगी**

पीठासीन अधिकारी मनोज कुमार मील ने फैसले में लिखा है कि प्रकृति ने मानव, पशु-पक्षी में कोई भेदभाव नहीं करते हुए सभी को दो आंखों का उपहार दिया है। एक-एक आंख का अपना अलग महत्व है। जब एक मानव अपनी पीड़ा लेकर चिकित्सक के पास आता

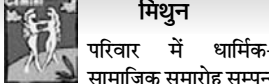
है, तो वह उम्मीदों से भरा रहता है। वह चिकित्सक पर उसी रूप में विश्वास करता है, जिस प्रकार एक सद्भावी व्यक्ति अनपे ईष्ट देता या प्राकृतिक रूप से मौजूद सूर्य, जल, वायु व अग्नि के होने का विश्वास करता है। आयोग की टिप्पणी है कि इस प्रकरण में



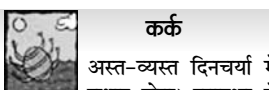
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बन्ने लगेगें। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यक्तिगत खर्चों में वृद्धि हो सकती है।



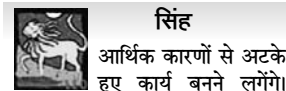
अपनी कार्य योजना को सीमित रखीं। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।



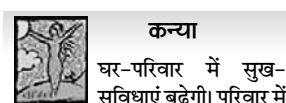
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



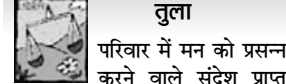
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।



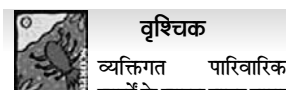
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बन्ने लगेगें। संभावित धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।



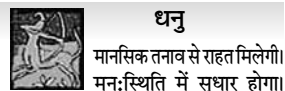
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।



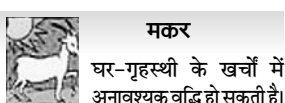
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



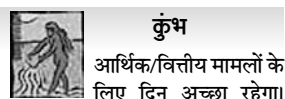
व्यक्तिगत पारिवारिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में आवश्यक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। शुभ-मांगलिक कार्यों से संबंधित आश्वासन प्राप्त होगा।



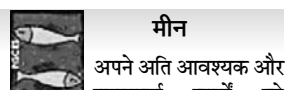
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बन्ने लगेगें। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आज मन में असंतोष बना रहेगा।



आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बन्ने लगेगें। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।